परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट

समाज रोज़ ही रोज़ प्रगति की ओर बढ़ती जा रही है। हर देश केलिए अपना रीती-रिवाज़ बड़ी अहम की बात होते है। सभ्यता और लोगों के बीच में सीमी हुई विशेष आचार और अनुष्ठानों ही हर देश को एक दूसरे से अलग किया जाते है। पुरखों की कड़ी मेहनत की फल-स्वरूप हम नये पीढ़ी आज आज़ादी की ताज़ा हवा महसूस करने की हक़ पाया है। उन लोगों ने हमारा समाज को एक सुदृढ़ नीव रखके गये है। उस नींव इतने सख़्त है कि, वह ऐसे-वैसे नहीं नष्ट हो जायेगा।

हमारा ~~अतीत~~ भूतकाल अनेक बुराईयाँ और भलाईयाँ से भरे हुआ दुनिया थी। पूरवजों की कुरबानियत और मेहनत से हम आज तक पहूँचे। उन सब बातों से बुराईयो को दूर फेंककर अच्छाईयों को अपनाना हमारे बस की बात होती है। लेकिन आज आधुनिकता की आँग बहुत तेज़ी ही फैलते जा रहे हैं। इसका रोकथाम करना इतना आसान ही नहीं है। अनुकरण एक नई शौक बन चुका है नई पीढी में। इस मुश्किल घड़ी में हम ज़रा सोचना चाहिए।

परंपरा एक देश को नीचा या ऊँचा बनाने का सहारा बन जाता है। एक देश की परंपरा से हमें समझ सकते हैं कि वह अच्छा है या बुरा। परंपरा की क्षेत्र में प्रमुख स्थान हमें सभ्यता को देना चाहिए। सभ्यता एक ऐसे शब्द है जो अपने जन्म हुआ मिट्टी से ही प्राप्त कर सकते हैं। हमारा मूल जहाँ भी हो लेकिन, हमारा वातावरण और हमारे चारों ओर की लोगों की बात-चीत, रीति-रिवाज, वस्त्रधारण, खाने की शैली आदि हम पर गहरा असर डालती है। उससे छुटकारा पाना असंभव है। एक कहावत है कि "बचपन की आदत हमारे मृत्यु तक हमारे साथ ही रहेगे"। हमारे देश की परंपरा में अनेक खूबियत होती है। वे हमारे दिन-भर की जीवन में बहुत उपयोग होते है। दवा-इलाज की क्षेत्र में, कला की क्षेत्र में, वैज्ञानिक जानकारी की क्षेत्र में, वास्तु की क्षेत्र में...

ऐसे वैसे मनुष्य गुण की सभी इलाकों पर वह अपना स्थान मजबूत किया है। इन ढेर सारी खूबीयों के बीच इस परंपरा के पीछे छिपे एक काला पर्दा भी होती है। वो अंतर्विश्वास और काली जादुओं से भरी हुई है। उस जमाने ने नारियों को बहुत कम हक दिये गये है। अंतर्विश्वास ने एक बड़ी हिसाब की समूह को निगल चुका है। गुलामी जैसी घिनौनी प्रथाओं से भरी भी हमारी परंपरा औषधी इलाजों के बदले भीषण बीमारियो को इलाज करने की ज्यादा जानकारी उनको नहीं मिला था। पुराने परंपरा में अपने इष्ट धरम को

चुनने की कोई अधिकार नहीं दिया गया था। सम्राटों और शाहज़ादों ने लोगों को अपने शासन के नीचे वंचित रख दिया था। सब लोगों को समान तरीके से देखने की अवसर नहीं मिलती थी। स्त्रीओं पर ~~होना~~ होते हुए सति, बालविवाह जैसे प्रथाओं को रोकथाम करने के लिए कोई रास्ता भी नहीं बची थी। लेकिन परंपरा को अपनाने और घृणा करनेवाले लोग अभी भी मौजूद है। एक सिक्का होते तो इसको पहलू दो वश होना है। इसलिए परंपरा को अपनाना या छोड़ना हर एक व्यक्ति की बस की बात होती है। लेकिन परंपरा की भलाईयों को ही चुनने में हम बहुत होशियार होना चाहिए।

परंपरा को महत्व कम होने वाले इस लोक में एक नयी मेहमान एक अस्त्र की तरह समाज को चुभ चुके है। वह लोगों के मन पर ऐसे ~~चिपक~~ चिपक गया कि, वैसे इसको उखाड़ना असंभव बन चुका है। परंपरा की तरह इस नया मेहमान - आधुनिकता को भी दो चेहरा होते है। इसलिए दोनों में सही चुनाना बहुत मुश्किल काम होते है। आधुनिकता वसूरी की तरह बेहद तेज़ ही उगल रही है। वह मानव का तन- और मन पर गहरा प्रभाव डाल दिया गया है। आज लोग पाश्चात्य संस्कृतियों को अपनाने के लिए बड़ी विवश बन चुका है। परदेसो की तरह कपड़े पहनना, खाना खाना, आदि एक ट्रैंड बन चुका है।

लेकिन आधुनिकता की मचा से कुछ लोग गुड़न हो रहे जाते है। लेकिन आज की पूरी नौजवानो आधुनिकता की पीछे ही, शहद के पीछे गये मधुमक्खी जैसे ही बन चुके है। आधुनिकता एक देश को विकासशील बनने में मदद करते है। इससे हमारा वैज्ञानिक, सांकेतिक, नैतिक, औद्योगिक, आर्थिक श्रेणियों में बेहतर बदलाव हो चुके है। स्पेस की क्षेत्र में आज भारत जैसा राष्ट्र बहुत तेजी ही बढ़ती जा रहे है। यह आधुनिकता अपनाने की गुण होते है। दवा-इलाज की क्षेत्र, ई-बैंकिंग, वैज्ञानिक क्षेत्र, पढ़ाई की क्षेत्र आदि आज ऊँची चोटियों तक पहुँच जानेवाला है। भारत की करनसी की बदलाव भी आधुनिकता की ही प्रभाव है। आज नये-नये हथियारो और शस्त्रों बनते जा रहे है। इसके द्वारा देश की सुरक्षा को मज़बूत बन सकते है। गैर राष्ट्रो से मुकाबला करने मे हमें प्राप्त कर देते है। लेकिन आधुनिकता एक हद तक अच्छा है, लेकिन उस पाबंदी को पार किया तो, बहुत गंदा भी बन सकता है। आधुनिकता का ज्यादा असर देश की संस्कृति को भंग करते है और देश की अस्तित्व मिट हो जाते है। बाकी राष्ट्रों को एक नमूना बनाने केलिए सिर्फ़ आधुनिकता से नहीं हो सकता। विभिन्न राष्ट्रों की विभिन्न सभ्यता मिलकर एक अच्छा

विश्व को बन सकते हैं।

आज नई पीढ़ी और बूढ़े लोगों के बीच बड़ी युद्ध हो जाते हैं। दोनों राय को मिलना-जुलना बहुत मुश्किल हो जाते हैं। तो आज घरों में झगड़ा भी रोज़ की मामला होते जा रहे हैं। आज युवकों ने आधुनिकता की लात होकर फाक मदहोश दुनिया में जी रहे हैं। उस पर कोई तरह की दबाव डालना ख़तरनाक काम हो जाते हैं। वह फाक आज़ी का मनोभाव धारण किये हैं। इसपर कपड़ों और बालों की सजावट को मामले में बड़ी बुरी असर डाली गयी हैं। आधुनिकता नशीली • चीज़ों को भी उपयोग करने को प्रेरित करते हैं जो अंत में अपने ही जाल बन जाते हैं। माध्यमों की प्रभाव भी आधुनिकता की साथ जुड़ी हैं। आज प्रदूषण भी बढ़ती जा रहे हैं। गंद चीज़ों की घुसना इसका प्रथम कारण होते हैं। आज पर्यावरण को संरक्षा करने में लोग मन नहीं लगता हैं। सब लोग आधुनिकता की दुनिया में व्यस्त हैं।

लेकिन आज, परंपरा को अपनाने वाले लोग भी कुछ बुरे काम करते हैं। वे अपने आदर्शों को ज़ोर से पकड़के दूसरों की भावनाओं को नीच दिखाने की कोशिश ही करती जा रहे हैं। वह नयी पीढ़ी को दबाव डालता हैं, जो उसकी मर्ज़ी के विरुद्ध हो जाते हैं। इस फुरसत में दो पक्षों के बीच टकराहट हो जाता हैं।

पे टकराहट तो जारी ही रखेंगे। क्योंकि हमारा देश पूरी तरह आधुनिकता की ओर आगे बढ़ने की हाल पर पहुँच गये है। लेकिन अपने परंपरा को पूरी तरह भूलना भी गलत बात हो जाते है। इसलिए लोगों के बीच एकता की खास आवश्यकता होती है। नहीं तो यह एक रणभूमि बन जायेगा। इसलिए दोनों पक्षों की भलाई को पहचानकर अलग करने की काबिलियत हम पर होना चाहिए। आधुनिकता एक हद तक अच्छा है, वैसे परंपरा भी। परंपरा की कड़ी आदर्शों को आधुनिकता को पसंद करनेवाले लोगो पर डालना उचित बात नहीं है। आज की दुनिया में हमारा राय बोलने मे और अपने मरजी के अनुसार कानून के अनुकूल बनके काम करने मे हमारा पूरा अधिकार है। हम भूतकाल की अनुभवों को तलाश करके उसको छानकर अच्छाई को अपनाकर, सब की परिणित भल को पहचानकर, सोच-समझके हमारा कदम उठाना चाहिए। नहीं तो बाद मे पछताना ही पड़ेगा।

हमारा जिंदगी का चाबी हमारा पास ही है। हम कोई खिलौना नहीं है दूसरो चाबी डालकर चलाने के लिए। इसलिए खुद को संभालो और सही चुनो।

जय हिंद।